अल्फ्रेड शूट्ज का फीनोमिनोलॉजिकल समाजशास्त्र

(Alfred Schutz, 1899-1959)

अलफ्रेड शूट्ज राष्ट्रीयता की दृष्टि से जर्मन थे। वे नाजी सरकार की ज्यादतियों से परेशान होकर 1939 में जर्मनी से अमेरिका भाग आये। उन्होंने अमेरिका के समाजशास्त्र में फीनोमिनोलॉजी को प्रस्तुत किया। शूट्ज की बहुत बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने हसरल के दर्शन को समाजशास्त्र में स्थापित किया। शूट्ज ने जीवन-जगत की चर्चा नहीं की है। लेकिन उनका मानना है कि *ज्ञान का एक विशाल भण्डार* (Stock of Knowledge) होता है जिसमें से प्रत्येक व्यक्ति अपने निजी ज्ञान को प्राप्त करता है। जिसे हम पुस्तक, रेलगाड़ी, आवास, पोषाक, भोजन, परिवार, जाति, वर्ग आदि समझते हैं वह और कुछ न होकर ज्ञान के विशाल भण्डार का एक अंग हैं। ज्ञान के भण्डार की ये विभिन्न वस्तुएं कई प्रकार की श्रेणियों में पायी जाती हैं। एक व्यक्ति इन श्रेणियों को जिन्हें वेबर *आदर्श प्रारूप* (Ideal Type) कहते हैं, ग्रहण करता है और आने वाली पीढ़ी को देता है। लेकिन शूट्ज के सम्बन्ध में ऐसा निष्कर्ष यहां देना शायद उतावलापन होगा। हम सिलसिले से शूट्ज की *फीनोमिनोलॉजी* को समझेंगे।

शूट्ज द्वारा दिया गया फीनोमिनालॉजी का सिद्धान्त

ई. 1939 में जब शूट्ज अमेरिका आये तो यहां के अकादमिक क्षेत्र में उनका कई विचारकों से सम्पर्क हुआ। इन्हीं दिनों में उनकी पुस्तक *द फीनोमिनालॉजी ऑफ द सोशल वर्ल्ड* (The Phenomenology of the Social World, 1967) का अंग्रेजी में अनुवाद हुआ।

इसके परिणामस्वरूप अमेरिका के समाजशास्त्री इनकी विचारधारा से परिचित हुए। यहां आकर उन्होंने अपने सिद्धान्त को निर्णायक रूप में रखा। उनका योगदान उनकी इस क्षमता में है कि उन्होंने हसरल के क्रान्तिकारी *फीनोमिनोलॉजी* का तेजी से विकास शुरु हुआ। दूसरा परिणाम यह कि इनकी फीनोमिनोलॉजी ने *इथनोमेथडोलॉजी* को जन्म दिया। और तीसरा, शूट्ज की *फीनोमिनोलॉजी* ने सम्पूर्ण सैद्धान्तिक संघर्ष को एक परिष्कृत रूप दिया।

शूट्ज का कृतित्व मैक्स वेबर की आलोचना से प्रारम्भ होता है। शूट्ज ने अपनी पुस्तक में और फुटकर निबन्धों में मैक्स वेबर की *सामाजिक क्रिया* (Social Action) की अवधारणा का अत्यधिक प्रयोग किया है। सामाजिक क्रिया तब होती है जब कर्ता एक दूसरे से परिचित होते हैं। इसके उपरान्त समाज दशा में कर्ता एक ही अभिप्राय को निकालते हैं। उदाहरण के लिये जब विवाह में बाराती सम्मिलित होते हैं तो वे सभी विवाह का अभिप्राय एक ही समझते हैं। यहां उनके अभिप्राय में कोई अन्तर नहीं होता। वेबर ने दृढ़तापूर्वक कहा

कि समाज के किसी भी विज्ञान को सामाजिक वास्तविकता के अभिप्राय को सही तरह से समझना चाहिये। वास्तविकता के विश्लेषण में अभिप्राय (Meaning) सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हैं। समाजशास्त्रीय अनुसंधान में हमारा प्रयत्न होना चाहिये कि हम लोगों की चेतना में प्रवेश करें और देखें कि लोग वस्तुओं को किस दृष्टि से देखते हैं, उन्हें किस प्रकार परिभाषित करते हैं और उनका क्या अभिप्राय लेते हैं? अध्ययन की इस प्रक्रिया में वेबर वेरस्टेहेन (Verstehen) यानी समझ या अभिप्राय की विधि को अपनाते हैं। किसी भी दशा में अनुसंधान कर्ता वस्तुओं के अन्दर पहुंच कर व्यक्तिनिष्ठ अर्थ को निकालता है। वेबर बराबर इस बात पर जोर देते हैं कि *अन्तःक्रिया* में व्यक्तियों द्वारा दिया गया अभिप्राय वास्तविक क्रिया है। यदि इस क्रिया में व्यक्ति का अभिप्राय निहित नहीं है तो यह क्रिया गतिविधि मात्र है। हम पुस्तकालय जाते हैं और कोई हमसे पूछे कि पुस्तकालय क्यों जा रहे हो तो हमारा अभिप्राय यदि अध्ययन का है, मनोरंजन का है, गप्प लगाने का है – जो भी अभिप्राय है और इसकी परिभाषा हम भी देंगे तब तो हमारी यह गतिविधि क्रिया है, अन्य का यह तो गतिविधि मात्र है। अतः क्रिया के किसी भी विश्लेषण में वेबर का आग्रह है कि *अभिप्राय* महत्वपूर्ण है।

शूट्ज ने अपनी मुख्य पुस्तक में सबसे पहले क्रिया की अवधारणा को उठाया है। शूट्ज ने विस्तारपूर्वक क्रिया की अवधारणा का आलोचनात्मक विश्लेषण किया। यहां शूट्ज वेबर की कटु आलोचना करते हैं। वेबर वेरस्टेहेन विधि को तो काम में लाते हैं लेकिन इस तथ्य को समझाने में असफल रहे है कि कर्ता क्यों और कैसी प्रक्रियाओं द्वारा सामान्य अभिप्राय निकालते हैं? पिछले दृष्टान्त में यदि बाराती विवाह में सम्मिलत होने का अभिप्राय मौज-मजा, खान-पान आदि से निकालते हैं तो वे किन प्रक्रियाओं द्वारा किन कारणों से इस अभिप्राय पर पहुँचे हैं? दूसरे शब्दों में वे कौन से समाजशास्त्रीय कारक हैं जो कर्ताओं को इस सर्वसम्मत निष्कर्ष पर पहुँचाते हैं? शूट्ज का कहना है कि शायद वेबर यह मानकर चले हैं कि सभी कर्ता व्यक्ति निष्ट अभिप्राय के भागीदार हैं। जब वेबर यह मानकर चलते हैं तो शूट्ज स्वाभाविक रूप से पूछते हैं : वे कौन से सामाजिक कारक हैं जो एक निश्चित अवस्था में (जैसे विवाह) कर्ता को एक समान अभिप्राय पर पहुंचाने के लिये उत्तरदायी हैं? वे किस तरह से एक ही दृष्टिकोण वाली दुनिया को पैदा करते हैं? वास्तव में यह समस्या *अन्तर्व्यक्ति निष्ठता* (Intersubjectivity) की है। शूट्ज की बौद्धिक योजना में *अन्तर्व्यक्ति निष्ठता* का स्थान केन्द्रीय है। शूट्ज की अवधारणा की टीका करते हुए *रिचार्ड जेनर* (Richard D. Zaner) कहते है–

> यह कैसे सम्भव है कि यद्यपि मैं आपके विचारों से सहमत नहीं हूँ, आपकी प्रेम और घृणा की जो भावना है उसे मैं ठीक नहीं समझता, आपके व्यवहार से मैं सन्तुष्ट नहीं हूं, फिर भी मैं आपके विचारों से, भावना से और अभिवृतियों से भागीदारी रखता हूं, शूट्ज के लिये वास्तविक समस्या अन्तर्व्यक्ति निष्ठावाद की है।

जेनर ने जो भी आपत्ति उठाई है, उसकी व्याख्या इस प्रकार है। शूट्ज कहते हैं कि *प्रत्येक क्रिया का अर्थ या उसका अभिप्राय कर्ता निकालता है।* समाज में सभी कर्ता विभिन्न दशाओं में या एक ही दशा में अपना व्यक्तिनिष्ठ अभिप्राय देते हैं। हमारे पिछले अध्याय में प्रत्येक कर्ता का व्यक्तिनिष्ठ अभिप्राय वह है कि विवाह में लोग मौज-मजा करते हैं। लेकिन सवाल यह है कि जब एक कर्ता का व्यक्तिनिष्ठ अर्थ दूसरे कर्ता के व्यक्तिनिष्ठ अर्थ से सहमति नहीं पाता, फिर कैसे विभिन्न व्यक्तिनिष्ठ अर्थ वाले कर्ता एक ही विचार से अपनी सहमति मानते हैं। यह द्विविधा शूट्ज की है और वास्तव में यह सम्पूर्ण समस्या अन्तर्व्यक्ति निष्ठावाद की है।

अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में शूट्ज हसरेल के फीनोमिनोलॉजी से अधिक प्रभावित थे, मीड का कृतित्व उन्हें किसी तरह से अभिप्रेरित नहीं करता था। बाद में चलकर शूट्ज हसरल से भी अलग हो गये। हसरल जब *व्यक्ति को आमूल चूल अमूर्त* (Radical Individual Abstraction) रूप से रखना चाहते हैं, एक विशुद्ध मस्तिष्क की खोज करना चाहते हैं तब शूट्ज उनसे असहमत नजर आते हैं। शूट्ज का आग्रह है कि चेतना के कोई अमूर्त नियम नहीं बनाये जा सकते। दूसरी ओर शूट्ज हसरेल की कतिपय धारणा को बिना किसी विवाद के स्वीकार करते हैं। व्यक्ति जीव जगत को जैसा भी वह है, स्वीकृत किया हुआ (Taken for granted) मानते हैं। शूट्ज हसरेल की इस धारणा से भी सहमत है कि लोग जीव-जगत के सभी तत्वों को समान रूप से एक जैसा समझते हैं। शूट्ज यह भी स्वीकार करते हैं कि जीव-जगत को समझे बिना व्यक्ति को नहीं समझा जा सकता।

शूट्ज जब अमेरिका आये तो उनकी फीनोमिनोलॉजी पर प्रारम्भिक प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावादियों और विशेषकर मीड व थॉमस का प्रभाव पड़ा। वास्तविकता यह है कि *सभी मनुष्यों के मस्तिष्क में उचित व्यवहार करने के लिये नियमों उपनियमों आदि की निश्चित धारणा होती है।* शूट्ज ने हसरल की जीवन-जगत की अवधारणा को भी विस्तार में रखा। मनुष्यों के मस्तिष्क में जीव-जगत के नियमों, मूल्यों, मानक और वस्तुओं के बारे में जो बोध या ज्ञान है, उसे तुरन्त उपलब्ध होने वाला *ज्ञान का भण्डार* (Stock Knowledge) कहते हैं। ज्ञान का जो भण्डार मनुष्य के मस्तिष्क में है वह मनुष्य की क्रियाओं को दिशा है।

ज्ञान का भण्डार एक ऐसी अवधारणा है जिसका अत्यधिक प्रयोग शूट्ज ने किया है। यहां हम इसकी विस्तार से व्याख्या करेंगे।